प्राक्कथन

वर्तमान समय में जब प्रत्येक देश विकास की असीम सम्भावनायें तलाश कर निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है, ऐसे में देश के भावी कर्णधार बालकों की ओर पर्याप्त ध्यान न दिया जाना अत्यन्त चिन्ता एवं दुःख का विषय है। अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर बाल श्रम समस्या के समाधान के लिये जो प्रयास किये जा रहे हैं वे प्रयास समस्या की गम्भीरता को देखते हुये अपर्याप्त सिद्ध हुये है। बाल श्रम समस्या की गम्भीरता एवं नन्हें–नन्हें बच्चों को विवशतावश शोषणकारी परिस्थितियों में काम करते हुये देखकर इस विषय पर शोधकार्य कर उनकी समस्याओं एवं विवशताओं को करीब से जानने की उत्सुकता ने मुझे इस अध्ययन को प्रारम्भ करने की प्रेरणा प्रदान की। मेरी उत्सुकता तथा समस्या के महत्व को समझते हुये मेरे शोध पर्यवेक्षक डा0 किशन कुमार ने मुझे इस कार्य के लिये प्रोत्साहित किया तथा अपना अमूल्य योगदान दिया।

बाल श्रम की समस्या भारत और सम्पूर्ण विश्व की एक बड़ी समस्या है। निर्धन परिवारों के बहुत से बच्चे निर्धनता के कारण काम के लिये भेजे जाते हैं। जिसके कारण वे शिक्षा एवं विकास के लिये आवश्यक सुविधाओं से वंचित रहते है। इस प्रकार उन्हें उस निर्धनता से निकल पाने का कोई अवसर नहीं मिल पाता जिसमें वे जन्म लेते हैं। बाल श्रम उन्मूलन के मुद्दे को लेकर विभिन्न मंचों पर देश के भीतर और बाहर चर्चायें हुई हैं और राज्य की ओर से इस प्रथा के उन्मूलन के लिये अनेक कदम भी उठाये गये हैं, लेकिन इन प्रयासों के बावजूद बाल श्रम की समस्या सम्पूर्ण विश्व के सामने निरन्तर एक बड़ी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक चुनौती के रूप में विद्यमान है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य बाल श्रम समस्या के कारण और परिणाम जानकर उसकी गम्भीरता का पता लगाना तथा शिक्षाविदों, विद्धानों एवं सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना है ताकि इस ज्वलन्त समस्या के समाधान के लिये उपयुक्त नीति तैयार कर कोमल बचपन को देश के भावी विकास में योगदान देने के लिये सुरक्षित किया जा सके। इस विस्तृत समस्या के सन्दर्भ में मेरा यह अध्ययन एक लघु प्रयास है।

शान्ती सचान